ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /95

ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा पर नगरीय संस्कृति का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

*चन्द्रशेखर सिंह एवं **प्रो0 अमिता सिंह
*शोध छात्र–समाजशास्त्र एवं **शोध पर्यवेक्षक
महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

भारतीय समाज की संस्कृति एवं सभ्यता में आदिकाल से ही नारियों की शिक्षा पर बल दिया गया है ''वैदिक युग में स्त्री शिक्षा अपनी उच्चतम सीमा पर थी, वह पुरुषों के समकक्ष बिना भेदभाव के शिक्षा प्राप्त करती थी। वह बुद्धि और ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी थीं। इस युग में अनेक विदुषी महिलाओं यथा–अपाला, घोषा, मैत्रेयी, उर्वशी विश्ववारा, सिकता, लोपामुद्रा, निबावरी, रमेशा आदि का नाम मिलता है।''[1] वर्तमान में महिला आबादी को देश की आधी आबादी के नाम से जाना जाने लगा है। अतः किसी भी समाज को पूर्ण विकसित बनाने के लिए उसकी सम्पूर्ण आबादी का शिक्षित होना आवाश्यक है।

''संस्कृति की निरन्तरता बनाए रखने के लिए शिक्षा एक सफल साधन है शिक्षा द्वारा समाज सांस्कृतिक परम्पराओं को अक्षुण बनाए रखता है। शिक्षा द्वारा संस्कृति के हस्तान्तरण में सहायता मिलती है, एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को संस्कृति का हस्तान्तरण करना चाहती है, यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही सरल होता है।''[2]

भारत में 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है, तो ग्रामीण समाज की नारियों का शिक्षित होना अति आवश्यक है तभी ग्रामीण समाज का उत्थान उचित तरीके से सम्भव है। वर्तमान समय में यदि ग्रामीण एवं नगरीय स्त्रियों की शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो परिणाम यह निकलेगा कि ग्रामीण स्तर पर महिलाओं के शिक्षा का स्तर नगरीय महिलाओं की तुलना में कम है, लेकिन अब यह असमानता की खाई बहुत तीव्र गति से पट रही है। ग्रामीण महिलाओं के शिक्षा के स्तर में तीव्र गति से विकास का प्रमुख कारण शिक्षा का अधिकार, निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा, निजी विद्यालयों का विकास, जनसंचार के साधनों का तीव्र गति से विकास, सोशल मीडिया एवं यातायात के साधनों की सुलभता के कारण नगरीय संस्कृति की अति समीपता को माना जा सकता है।

प्रमुख शब्द– आधी आबादी, असमानता की खाई, विद्या धन, सोशल मीडिया, सुकन्या, सुमंगला, शिक्षा का अधिकार।

''शिक्षा अपने पर्यावरण में एक पौधे की भाँति विकसित होती है। स्थान–स्थान और समय–समय पर पर्यावरण की भिन्नता तथा उसके परिवर्तन के साथ ही साथ शिक्षा में भी परिवर्तन होता है। जिस भूमि में यह (शिक्षा) विकसित होती हैं, उसी भूमि का रंग उस पर चढ़ता है।''[3] भारत की वर्तमान महिला साक्षरता दर पुरुष साक्षरता दर से पीछे है। 2011 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है, ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति अधिक गम्भीर है, जहाँ लड़कों की तुलना में कम लड़कियाँ स्कूल जाती हैं और लड़कियों के बीच ड्राप आउट दर की संख्या खतरनाक है।''[4] किन्तु वर्तमान ग्रामीण शैक्षिक परिवेश को दृष्टि में रखते हुए निश्चय ही कहा जा सकता है कि ग्रामीण महिलाओं में अब शिक्षा का स्तर तीव्र गति से बढ़ रहा है। ग्रामीण समाज में महिला शिक्षा को तीव्र गति प्रदान करने में भारत सरकार द्वारा चलायी जा रहीं विभिन्न योजनाओं यथा– बेटी बचाओं बेटी

पढ़ाओं, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय, सुकन्या समृद्धि योजना, सुमंगला योजना, इन्दिरा महिला योजना, कन्या विद्याधन, सर्वशिक्षा अभियान आदि योजनाएँ भी औषधि का कार्य कर रही हैं। ''परिणामतः स्त्रियों की शिक्षा में पर्याप्त सुधार हुए हैं। पहले बहुत ही कम स्त्रियाँ पढ़ी–लिखी होती थी परन्तु आज स्त्रियाँ शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ रही हैं। सन् 1951 की जनगणना के अनुसार भारत में केवल 8.86 प्रतिशत स्त्रियाँ ही शिक्षित थी परन्तु सन् 2011 की जनगणना से पता चलता है कि 65.46 प्रतिशत स्त्रियाँ पढ़ी–लिखी हैं। वर्तमान में स्त्रियाँ वैज्ञानिक, सामाजिक, राजनीतिक, व्यावसायिक, तकनीकी सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।''[5]

उद्देश्य–

1. ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा पर नगरीय संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण महिलाओं के शिक्षा की वर्तमान स्थिति को ज्ञात करना।
4. नगरीय संस्कृति के प्रभाव से ग्रामीण महिला शिक्षा में बदलाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. नगरीय संस्कृति के प्रभाव से ग्रामीण महिला शिक्षा प्रभावित हुई है।
2. नगरीय संस्कृति के प्रभाव से ग्रामीण महिला शिक्षा के स्तर में वृद्धि होती दिखलाई पड़ती है।
3. यातायात के साधनों के विकास के प्रभाव स्वरूप ग्राम एवं नगर में समीपता आयी है।
4. दूर संचार के साधनों के विकास से भी ग्रामीण महिला शिक्षा प्रभावित हुई है।

शोध प्रारूप–

प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के जनपद सुल्तानपुर की पूर्वी सीमा पर स्थित अखण्डनगर विकासखण्ड के चार गाँवों यथा– वनवहा सिरखिनपुर, बड़ोरा ख्वाजापुर, जगदीशपुर तथा पारावासूपुर से कुल 75 उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन विधि से किया गया है। अध्ययन में अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग करते हुए वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के आधार पर सूक्ष्म वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है।

प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के आधार पर जानकारी प्राप्त की गयी तथा द्वितीयक स्रोत के अन्तर्गत सरकारी आँकड़ों का भी एकत्रीकरण किया गया उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा नगरीय संस्कृति से प्रभावित हुई है।

एकत्रित तथ्यों का विश्लेषणः–

साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त अव्यवस्थित तथ्यों को व्यवस्थित कर वर्गीकरण के पश्चात् सारणीबद्ध करके विश्लेषण किया गया है। विभिन्न प्रश्नों का सारणीयन निम्न प्रकार से किया गया हैः–

तालिका संख्या–01

उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर

क्रम संख्या	शैक्षिक आवृत्ति	संख्या	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	04	5.33
2.	प्राथमिक शिक्षा	16	21.33
3.	माध्यमिक शिक्षा	33	44.00
4.	उच्च शिक्षित	22	29.33
	योग	**75**	**100**

सारणी संख्या–.1 के अध्ययन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 44 प्रतिशत उत्तरदाता माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हैं, सबसे कम 5.33 प्रतिशत अशिक्षित तथा 21.33 प्राथमिक एवं 29.33 प्रतिशत उत्तरदाता उच्च शिक्षित हैं।

तालिका संख्या–02

ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा पर नगरीय संस्कृति का प्रभाव

क्रम संख्या	शैक्षिक आवृत्ति	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	58	77.00
2.	नहीं	05	6.67
3.	आंशिक रूप से	12	16.00
	योग	**75**	**100**

तालिका संख्या–02 के विवरण से स्पष्ट है कि 77 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि ग्रामीण महिला शिक्षा नगरीय संस्कृति से प्रभावित है जबकि 6.67 प्रतिशत उत्तरदाता नहीं मानते एवं 16 प्रतिशत का मानना है कि ग्रामीण महिला शिक्षा पर नगरीय संस्कृति का प्रभाव आंशिक है।

तालिका संख्या–03

ग्रामीण महिला शिक्षा में नगरीय संस्कृति के प्रभाव से परिवर्तन

क्रम संख्या	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	ग्रामीण महिला शिक्षा में तीव्र वृद्धि	31	41.33
2.	व्यावसायिक एवं रोजगार परक शिक्षा में वृद्धि	26	34.67
3.	शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि	18	24.00
	योग	**75**	**100**

तालिका संख्या 03 के विवरण से स्पष्ट हैं कि नगरीय संस्कृति के प्रभाव से ग्रामीण महिला शिक्षा के सभी अंगों में परिवर्तन हुआ है जिसमें 41.33 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि नगरीय संस्कृति के प्रभाव से ग्रामीण महिला शिक्षा में तीव्र गति से वृद्धि हुई है, 34.61 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि व्यावसायिक और रोजगारपरक शिक्षा में वृद्धि हुई है, तथा 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं का विचार है कि नगरीय संस्कृति के प्रभाव से ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता में तीव्र गति से वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष–

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का सर्वप्रमुख साधन है। वर्तमान समय में भी भारत की 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है जिसमें आधी आबादी महिलाओं की है जो नगरीय संस्कृति के प्रभाव से अछूती नहीं है। यदि अवलोकन किया जाय तो यह पाया जाता है कि नगरीय संस्कृति ने ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा को पूर्ण रूपेण प्रभावित किया है। आज ग्रामीण महिला उच्च शिक्षा, रोजगार परक शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा में पुरुषों से एक कदम भी पीछे नही है जिसका प्रमुख श्रेय नगरीय संस्कृति एवं संचार साधनों को जाता है। जिसने ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करने में कोई कसर नहीं छोड़ा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. मिश्र, डॉ0 जयशंकर : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1980, पृ0 188
2. पाण्डेय, डॉ0 रामशकल : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–7, पृ0 445
3. लल्ला, वी0पी0 : सोशल साइंस ऑफ एड् यूको–इकोलॉजी, ज0ए0ई0, अंक–7, 1993, पृ0 5
4. http/hindi.theindianwire- भारत में नारी पर निबन्ध, 22 जुलाई 2019
5. मुकर्जी रवीन्द्रनाथ : भारतीय समाज व संस्कृति, विवेक प्रकाशन–2016, पृ0 221–222